PAPER-III
COMPARATIVE LITERATURE

Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) _____
   (Name) _____
2. (Signature) _____
   (Name) _____

Roll No. | | | | | | | | |
(In figures as per admission card)

Roll No._____
(In words)

D 72 1 0

Time : **2 1/2** hours] [Maximum Marks : **200**

Number of Pages in this Booklet : **32** Number of Questions in this Booklet : **19**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।
9. किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।

COMPARATIVE LITERATURE
तुलनात्मक साहित्य

PAPER-III
प्रश्नपत्र-III

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खंड हैं । अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

SECTION – I

खंड – I

Note : This section consists of **two** essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 Marks)**

नोट : इस खंड में **बीस–बीस** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ (500)** शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

1. A definition of Comparative Literature and its scope in the Indian context.

   भारतीय संदर्भ में तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा और उसका विस्तार क्षेत्र ।

OR / अथवा

Croce's view that any literary study is essentially comparative. Give reasons in support of your answer.

क्रोचे का विचार है कि कोई भी साहित्यिक अध्ययन अनिवार्यत: तुलनात्मक होता है । अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए ।

2. Literature and Theatre Arts.
साहित्य और रंगमंच कलाएँ

OR / अथवा

The Mode of Existence of a Literary Work of Art.
कला की साहित्यिक रचना की विद्यमानता का ढंग

SECTION – II
खंड – II

Note : This section contains **three (3)** questions of **fifteen (15)** marks each, to be answered in about **three hundred (300)** words. **(3 × 15 = 45 Marks)**

नोट : इस खंड में **पन्द्रह-पन्द्रह** अंकों के **तीन (3)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीन सौ (300)** शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

3. Examine the view that period is "a time section dominated by a system of norms, whose introduction, spread and diversification, integration and disappearance can be traced." (Wellek).
इस विचार की परीक्षा करें कि काल "वह समय खंड है जो मानदंडों की पद्धति द्वारा अधिकार में रखा जाता है जिनकी, शुरुआत, प्रसार और विविधिकरण, एकीकरण और विलोपन का पता लगाया जा सकता है" (वेलेक) ।

4. Discuss the problems inherent in translating from a translation.
अनुवाद से अनुवादित करने से जुड़ी समस्याओं की विवेचना कीजिये ।

5. Briefly comment on the reception of Shakespeare in India.
भारत में शेक्सपियर के अभिग्रहण पर संक्षिप्त टिप्पणी करें ।

SECTION – III
खंड – III

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks each, each to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 Marks)**

नोट : इस खंड में **दस-दस (10-10)** अंकों के **नौ (9)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास (50)** शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

6. How do you distinguish between Historicism and New Historicism ?
आप इतिहासपरकवाद और नव-इतिहासपरकवाद के बीच किस प्रकार अन्तर करते हैं ?

7. Define a ballad with examples.
गाथागीत की सोदाहरण परिभाषा दें ।

8. What does Kṣemendra mean by aucitya ?
क्षेमेन्द्र के अनुसार औचित्य का क्या अर्थ है ?

9. How are themes concretized in literary works ?
साहित्यिक रचनाओं में विषयवस्तु को किस प्रकार साकार किया जाता है ?

10. How does Petersen define a plot ?
पीटरसन ने कथावस्तु (कथानक) को किस प्रकार परिभाषित किया है ?

11. Distinguish between "influence" and "analogy".
"प्रभाव" और "सादृश्य" के बीच अन्तर करें ।

12. What does the term "allegory" mean ?
"रूपक कथा" पद का क्या अर्थ है ?

13. What do the post-modern critics mean by "the death of the author" ?
"दी डेथ ऑफ दी ऑथर" से उत्तर आधुनिक आलोचकों का क्या अर्थ है ?

14. Distinguish between Akam and Puram poetry, as discussed by the ancient Tamil grammarians.
अकम और पुरम काव्य की जिस प्रकार से प्राचीन तमिल व्याकरण वेत्ताओं द्वारा विवेचना की गई है उनके बीच अन्तर करें ।

SECTION – IV
खंड – IV

Note : This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.

(5 × 5 = 25 Marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच (5)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच (5)** अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

It is usual for every prominent philosopher in the West to regard the question of beauty as a part of the problem he is attempting to solve. Hence aesthetics has come to be recognized there as a regular part of philosophy. The intrinsic relation implied in this between aesthetics and philosophy is not denied in India; but the former of these studies is carried on by a distinct class of thinkers – Ālaṃkārikas as they are called, or literary critics – who are not, generally speaking, professional philosophers. This separation of aesthetic problems, in the matter of investigation, from those of general philosophy may at first sight appear not only strange but also defective; a little reflection, however, will show that it is not really so. Before explaining this point, however, it is necessary to state that when we say that Indian philosophers have not troubled themselves with questions of beauty, what is meant is only that they do not deal with beauty in art and not also [sic] beauty in nature. The latter is certainly included; but, while it is explicit in some systems, it is only implicit in others. The exact view which they hold in this respect will become clear as we proceed. As regards their neglect of beauty in art, the reason is that its pursuit cannot, according to them, directly minister to the attainment of the final goal of life, which is the prime concern of Indian philosophers. Perhaps some among them thought that its pursuit might even tend to lead man away from that goal, in which case their attitude towards art would be like that of Plato towards the same.

पश्चिम में प्रत्येक प्रमुख दार्शनिक के लिये सौन्दर्य के प्रश्न को उस समस्या जिसका वह हल करने की चेष्टा कर रहा है का एक भाग समझना आम बात है । अत: वहाँ सौन्दर्यशास्त्र को दर्शनशास्त्र का नियमित भाग माना जाने लगा है । सौन्दर्यशास्त्र और दर्शनशास्त्र के बीच इसमें उपलक्षित मूलभूत सम्बन्ध भारत में नकारा नहीं गया है; परन्तु इन अध्ययनों में से पहला (सौंदर्यशास्त्र) विचारकों – आलमकारिक जैसा कि वह कहलाये जाते हैं, अथवा साहित्यिक आलोचकों – जो सामान्य तौर पर पेशेवर दार्शनिक नहीं हैं – के भिन्न वर्ग द्वारा आगे बढ़ाया गया है । शोध के मामले में, सामान्य दर्शनशास्त्र की समस्याओं से सौन्दर्यपरक समस्याओं का यह अलगाव पहली नज़र में न केवल अद्‌भुत परन्तु त्रुटिपूर्ण भी प्रतीत हो सकता है ; तथापि, थोड़ा सा चिन्तन दर्शाएगा कि वास्तव में ऐसा नहीं है। तथापि, इस बात को स्पष्ट करने से पहले, यह बताना आवश्यक है कि जब हम कहते हैं कि भारतीय दार्शनिकों ने अपने आप को सौन्दर्य के प्रश्नों के साथ परेशान नहीं किया, तो उसका तात्पर्य केवल यह है कि वे लोग कला में सौन्दर्य और प्रकृति में सौन्दर्य के इस प्रश्न पर विचार नहीं करते हैं । दूसरे (दर्शनशास्त्र) को निश्चित रूप से सम्मिलित किया गया है ; परन्तु यह जबकि कुछ चिन्तन प्रणालियों (विचारधाराओं) में सुस्पष्ट है, दूसरों में यह अस्पष्ट है । इस सम्बन्ध में उनका ठीक-ठीक विचार हमारे आगे बढ़ने पर स्पष्ट हो जायेगा । कला में सौन्दर्य के सम्बन्ध में उनकी उपेक्षा की जहाँ तक बात है, कारण यह है कि उनके अनुसार, उसके लिये चेष्टा को जीवन के अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति जो कि भारतीय दार्शनिकों का मुख्य सरोकार है, के साथ सीधे सम्बन्धित नहीं किया जा सकता है । उनमें से कुछ ने शायद सोचा कि उसे पाने की चेष्टा व्यक्ति को उस लक्ष्य से शायद दूर भी कर सकती है, जिस स्थिति में फिर कला के प्रति उनकी अभिवृत्ति प्लेटो की अभिवृत्ति के समान होगी ।

15. What prompts the western philosopher to treat aesthetics and philosophy as related ?
सौन्दर्यशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र को एक दूसरे से सम्बन्धित मानने के लिये पाश्चात्य दार्शनिक को किस बात ने प्रेरित किया ?

16. How are Indian literary critics different from western philosophers ?
भारतीय साहित्यिक आलोचक पश्चिमी दार्शनिकों से किस प्रकार भिन्न हैं ?

17. Do you agree with the view that the Indian approach to the question of beauty is defective ?
क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि सौन्दर्य के प्रश्न को लेकर भारतीय रवैया त्रुटिपूर्ण है ?

18. Why do Indian philosophers refrain from addressing the question of beauty ?
भारतीय दार्शनिक सौन्दर्य के प्रश्न को सम्बोधित क्यों नहीं करते हैं ?

19. What do you understand from the passage about Plato's views on art ?
कला पर प्लेटो के विचारों के बारे में इस परिच्छेद से आप क्या समझते हैं ?

Space For Rough Work

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	

Total Marks Obtained (in words) .....

(in figures) .....

Signature & Name of the Coordinator .....

(Evaluation) Date .....